International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, January-June 2024, Submitted in February 2024, ISSN -2393-8048

राष्ट्र निर्माण में अहिंसात्मक राजनीति का महत्वः गांधी के दृष्टिकोण से

Abhinawa Pokhriyal, Research Scholar, Glocal School of Arts and Social Science
Dr. Waseem Ahmed, Assistant Professor, Glocal School of Arts and Social Science

सारांश

महात्मा गांधी के अनुसार राष्ट्र निर्माण केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसे सामाजिक, नैतिक और आर्थिक समृद्धि के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए। गांधी का मानना था कि अहिंसात्मक राजनीति राष्ट्र के स्थायी विकास और शांति की नींव है, क्योंकि यह केवल हिंसा का परित्याग नहीं बल्कि विचार, शब्द और कर्म में हिंसा से दूर रहने का मार्ग है। सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत समाज में नैतिक जागरूकता, सामाजिक एकता और सहयोग को बढ़ावा देते हैं। राष्ट्र निर्माण में यह दृष्टिकोण समाज में समानता और सामूहिकता को स्थापित करता है, नेतृत्व को न्यायपूर्ण और पारदर्शी बनाता है, आंतरिक और बाहरी संघर्षों में स्थायी शांति सुनिश्चित करता है और सामाजिक–आर्थिक विकास को न्यायसंगत बनाता है। आज भी लोकतंत्र, मानवाधिकार और अंतरराष्ट्रीय शांति के संदर्भ में गांधी के अहिंसात्मक सिद्धांत प्रासंगिक हैं, जो स्पष्ट करते हैं कि राष्ट्र निर्माण का सर्वोत्तम मार्ग सत्य, न्याय और अहिंसा के पालन से ही संभव है।

कुंजी शब्द : अहिंसात्मक राजनीति, राष्ट्र निर्माण, महात्मा गांधी, सत्याग्रह, सामाजिक एकता, नैतिक नेतृत्व, स्थायी शांति, लोकतंत्र और मानवाधिकार

परिचय

गांधी की राजनीतिक विचारधारा द्वारा प्रदर्शित सामाजिक–राजनीतिक दृष्टि, जो प्रेम और अहिंसा पर आधारित है, केवल न्याय की मांग तक सीमित नहीं है। इसका अर्थ यह है कि सभी लोगों को उनके अधिकार और सम्मान प्राप्त होना अनिवार्य हैं। गांधी के अनुसार अहिंसा का अभ्यास केवल दूसरों के प्रति न्याय करने तक सीमित नहीं है; यह जीवन के प्रत्येक पहलूकृविचार, शब्द और कर्मकृमें हिंसा से दूर रहने का मार्ग है। इसके लिए गांधी ने अपने संसाधनों, अपने जीवन और भौतिक संपत्ति का बलिदान दिया। उनके अहिंसात्मक प्रयास सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अन्याय को समाप्त करने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों स्तरों पर किए गए। यह प्रयास सामूहिक इसलिए था क्योंकि उन्हें भारतीय व्यापारियों, समाज के उच्च वर्ग, और दक्षिण अफ्रीका व अन्य देशों में रहने वाले लोगों का समर्थन मिला। यह व्यक्तिगत भी था क्योंकि गांधी ने न्याय की लड़ाई चुनकर गरीब और उपेक्षित नागरिकों के हित की रक्षा की। इसके लिए उन्होंने आत्म–अनुशासन अपनाया, कई शांतिपूर्ण अभियान चलाए, जैसे नमक सत्याग्रह, और भारतीय नागरिकों पर हुई अन्यायपूर्ण घटनाओं के खिलाफ नागरिक अवज्ञा का अभ्यास किया।

सुकरात और यीशु मसीह की शिक्षाओं की तरह, गांधी ने भी यह सिद्ध किया कि न्याय की प्राप्ति के लिए कभी–कभी व्यक्तिगत पीड़ा और संघर्ष स्वीकार करना पड़ता है। गांधी के अनुसार, जो कोई अन्याय को समाप्त करना चाहता है, उसे हिंसा का सहारा लिए बिना पूरी ताकत और निडरता के साथ प्रयास करना चाहिए। मानव स्वभाव में कोमलता, तर्कशीलता और सामाजिक संवेदनाएँ निहित हैं, और यही गुण उसे जानवरों से अलग और अहिंसक बनाते हैं। मनुष्य का उद्देश्य सदियों से आत्म–साक्षात्कार, आत्म–शुद्धि और अज्ञान तथा असभ्य स्वभाव से मुक्ति प्राप्त करना रहा है। इसे हासिल करने के लिए मानव का प्रेरक बल शांतिपूर्ण और अहिंसक होना चाहिए। गांधी ने भी कहा है कि नैतिकता का पालन करने के लिए मन और भावनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है, क्योंकि मन अपनी इच्छाओं के अनुसार हमेशा बेचैन रहता है। इस प्रकार, वास्तविक अनुभव और निरंतर प्रयोग ने गांधी को सत्याग्रह और अहिंसा के सिद्धांत स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।

हिंसा का औचित्य आमतौर पर स्वार्थ और परिस्थिति आधारित होता है, जबकि गांधीवादी दृष्टिकोण जीवन, मानव गरिमा, न्याय और प्रेम को सर्वोच्च मानता है। हिंसा के स्थान पर अहिंसा का मार्ग अपनाने से न केवल स्वतंत्रता और समानता प्राप्त होती है, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में स्थायी शांति और न्याय भी स्थापित होता है। गांधी की अहिंसात्मक राजनीति केवल ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ नहीं, बल्कि व्यावहारिक और नैतिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है, जिसे आज भी सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों में मार्गदर्शक के रूप में अपनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आज के समय में कई राष्ट्र और आंदोलन अहिंसात्मक मार्ग अपनाकर अपने अधिकार और स्वतंत्रता की प्राप्ति कर रहे हैं। यह स्पष्ट करता है कि हिंसा और युद्ध की अपेक्षा अहिंसात्मक राजनीतिक मार्ग अधिक स्थायी, न्यायपूर्ण और मानवतावादी है।

अहिंसा की समझ

गांधी के अनुसार अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का परित्याग नहीं है, बल्कि यह मन, वचन और कर्म में

हिंसा से दूर रहने की संपूर्ण जीवनशैली है। ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी (Hornby, Ashby & Wehmeier 2000) में अहिंसा को "राजनीतिक या सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए शक्ति का उपयोग न करके शांतिपूर्ण तरीकों का पालन करने की नीति" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसका अर्थ है कि किसी भी स्थिति में स्वयं और दूसरों के प्रति हानिरहित रहने का अभ्यास करना, क्योंकि किसी भी प्रकार की हिंसा सामाजिक या राजनीतिक परिवर्तन प्राप्त करने के लिए अनावश्यक और अनैतिक है। गांधी ने यह स्पष्ट किया कि अहिंसा का मार्ग सक्रिय और प्रभावशाली है। इसे केवल निषेधात्मक रूप में नहीं, बल्कि सकारात्मक शक्ति के रूप में अपनाना आवश्यक है। गांधी के अनुसार शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं, बल्कि अटूट इच्छाशक्ति और नैतिक साहस से आती है। अहिंसा अनुयायी अपनी इच्छाशक्ति और धैर्य का प्रयोग करके अन्याय, अत्याचार और दमन का विरोध करते हैं। गांधी ने इसे "सचेत पीड़ा का अभ्यास" बताया, जिसका अर्थ है कि अहिंसा में कभी–कभी आत्म–सम्मान और न्याय की रक्षा के लिए संघर्ष और पीड़ा सहना पड़ता है, लेकिन हिंसा का सहारा नहीं लिया जाता।

अहिंसा का यह दृष्टिकोण व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर लागू होता है। व्यक्तिगत स्तर पर यह मन और इंद्रियों के नियंत्रण और आत्म–अनुशासन का अभ्यास है, जो व्यक्ति को स्वभावगत आवेगों और वासनाओं से ऊपर उठने में सक्षम बनाता है। सामाजिक स्तर पर अहिंसा का अर्थ है सामाजिक अन्याय, भेदभाव और हिंसात्मक संरचनाओं के खिलाफ शांति और संवाद के माध्यम से संघर्ष करना। गांधी के विचार में अहिंसा और प्रेम (Agape) का अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण भी महत्वपूर्ण है। गांधी ने बिना शर्त प्रेम, क्षमा और न्याय का उपदेश दिया, यहाँ तक कि अपने अत्याचारी या विरोधियों के प्रति भी। यह दृष्टिकोण व्यक्ति को केवल अपने अधिकारों की रक्षा नहीं सिखाता, बल्कि दूसरों की सेवा और समाज के कल्याण की दिशा में कार्य करने की प्रेरणा देता है। अहिंसा की यह समझ राजनीति को केवल सत्ता या जीत–हार का साधन नहीं मानती; बल्कि इसे नैतिक नेतृत्व और न्यायपूर्ण शासन की कला के रूप में देखती है। इस प्रकार, गांधी की अहिंसा केवल व्यक्तिगत नैतिकता का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में स्थायी शांति और न्याय प्राप्त करने का सक्रिय माध्यम है। इसे अपनाकर व्यक्ति और समाज दोनों ही अधिक न्यायपूर्ण, सशक्त और नैतिक बन सकते हैं।

राजनीति क्या है?

यह समय अहिंसात्मक राजनीति का अध्ययन करने के लिए एक रोमांचक युग है। पूरी दुनिया आज राजनीतिक और आर्थिक संकट का सामना कर रही है। राजनीतिक और सामाजिक–आर्थिक संकट तथा राजनीतिक गतिविधियों में गंभीर चर्चाओं ने राजनीतिक गतिविधियों की प्रकृति, विशेषकर राजनीतिक अशांति, के बारे में गहरे और जटिल प्रश्न उठाए हैं। राजनीति की परिभाषा दर्शनशास्त्र की परिभाषा जितनी ही कठिन है। इसका कारण यह है कि कई राजनीतिक सिद्धांत उभरे हैं, और प्रत्येक सिद्धांत यह दावा करता है कि वह अन्य पर श्रेष्ठ है। इन वर्तमान बहसों के बावजूद, राजनीति को परिभाषित करने के लिए अधिक सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य परिभाषा यह है कि राजनीति उस गतिविधि से संबंधित है जो किसी देश की सरकार के साथ जुड़ी होती है, जिसका मुख्य उद्देश्य समाजिक स्थिति में सुधार करना या व्यक्तिगत शक्ति बढ़ाना होता है। राजनीति कला और विज्ञान दोनों है। यह कला इसलिए है क्योंकि यह एक सचेत और कुशल क्षेत्र है, जहाँ रचनात्मक और बुद्धिमान नेता राष्ट्र निर्माण के लिए अपनी शासन–कुशलताओं का अन्वेषण करते हैं। यह विज्ञान इसलिए है क्योंकि यह अविकसित समस्याओं को हल करने में व्यावहारिक है।

राजनीति शब्द ग्रीक शब्द 'Politikos' से लिया गया है, जिसका अर्थ है, 'नागरिकों से संबंधित।' प्लेटो ने राजनीति की आलोचनात्मक रूपरेखा इस तरह दी कि इसमें एक आदर्श राज्यसत्तावान (Statesman) हो, जो निर्णय लेने में सही, न्यायपूर्ण और सत्य का भान करने वाला सद्‌गुणशील व्यक्ति हो। राजनीति का उद्देश्य लोगों को सद्‌गुणपूर्वक शासन करना है, ताकि एक ऐसा विश्व बनाया जा सके जो राजनीतिक युद्ध और भ्रष्टाचार से मुक्त हो, और मानसिक संपत्ति को बढ़ाया जाए न कि केवल भौतिक संपत्ति। प्लेटो के आलोचक यह कहते हैं कि प्लेटो का राजनीति का दृष्टिकोण अवास्तविक यूटोपियन विचारों पर आधारित है। अतः राजनीति में लोगों के समूह के लिए साझा निर्णय लेना शामिल है; इसमें शासन की स्थिति का उपयोग बड़े मानव विकास की भावना के साथ करना होता है, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक मूल्यों के क्षेत्र का विस्तार करना होता है। राजनीति यह दर्शाती है कि मानव समाज और जीवन को कैसे सर्वोत्तम तरीके से व्यवस्थित किया जाना चाहिए, जैसे सामाजिक प्रथाओं और राजनीतिक संस्थाओं का संचालन; धार्मिक मतभेदों का संतुलन; और खनिज संसाधनों और मानव शक्ति का न्यायपूर्ण वितरण।

अहिंसा – मानव स्वभाव का अभिन्न अंग

गांधीवादी दृष्टिकोण में अहिंसा केवल एक रणनीति या तकनीक नहीं, बल्कि मानव जीवन का स्वाभाविक

और अनिवार्य हिस्सा है। अहिंसा का अभ्यास मन, शब्द और कर्म में हिंसा से दूर रहने का मार्ग है और यह प्रत्येक तर्कसंगत और नैतिक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से विद्यमान होता है। गांधी (1967) ने स्पष्ट किया कि अहिंसा कमजोरों द्वारा अपनाई गई रणनीति नहीं, बल्कि मानव समाज का मूल गुण है, जिसे अपनाने के लिए व्यक्तिगत साहस और नैतिक प्रतिबद्धता आवश्यक है। अहिंसा का अर्थ केवल शारीरिक हिंसा का त्याग नहीं है, बल्कि इसमें नैतिक साहस, इच्छाशक्ति और सामाजिक जिम्मेदारी भी निहित है। इसे अपनाने वाले लोग न्याय, समानता और मानव कल्याण के लिए अपने अधिकारों, स्वतंत्रता और सम्मान की रक्षा करते हुए भी हिंसा का सहारा नहीं लेते। गांधी ने इसे "सचेत पीड़ा का अभ्यास" कहा, क्योंकि अहिंसात्मक संघर्ष में कई बार व्यक्तिगत कठिनाइयाँ और पीड़ा भी सहनी पड़ती है। व्यावहारिक दृष्टि से, अहिंसा केवल व्यक्तिगत नैतिकता तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अन्याय के खिलाफ प्रभावशाली माध्यम है। गांधी और उनके अनुयायियों ने सत्याग्रह और नागरिक अवज्ञा के माध्यम से अपने अधिकार और न्याय की प्राप्ति की, यह दिखाते हुए कि अहिंसा से भी सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन संभव हैं।

अहिंसा मानव जीवन के लिए ब्रह्मांडीय नियम की तरह है, जैसे गुरुत्वाकर्षण। इसे अपनाने और अभ्यास करने से जीवन में सकारात्मक परिवर्तन, शांति और स्थायित्व आते हैं। इसके विपरीत, हिंसा केवल और अधिक हिंसा और विनाश को जन्म देती है। गांधी ने अहिंसा को एक जीवन शैली और नैतिक अनुशासन के रूप में प्रस्तुत किया, जो प्रेम, करुणा और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित है। इस प्रकार, अहिंसा मानव स्वभाव का अभिन्न हिस्सा है और यह समाज के नैतिक, सामाजिक और राजनीतिक विकास के लिए अनिवार्य है। इसे अपनाकर व्यक्ति और समाज दोनों अधिक न्यायपूर्ण, स्थायी और सशक्त बन सकते हैं। गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे नेताओं के अनुभव यह दर्शाते हैं कि अहिंसात्मक दृष्टिकोण न केवल नैतिक रूप से सही है, बल्कि संघर्षों में प्रभावशाली और स्थायी भी है।

अहिंसा – अहिंसात्मक राजनीति की नींव

गांधी की अहिंसात्मक राजनीति का मूल आधार ईसाई प्रेम (Agape) और अहिंसा है। गांधी के अनुसार, केवल अहिंसा के सिद्धांतों का पालन ही पर्याप्त नहीं है; व्यक्ति के पास पर्याप्त बुद्धि और नैतिकता भी होनी चाहिए, ताकि वह अपने सहयोगियों और विरोधियों दोनों के प्रति प्रेम और सम्मान प्रदर्शित कर सके। इस दृष्टिकोण में, अहिंसा केवल एक नैतिक मूल्य नहीं, बल्कि सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए एक पवित्र रणनीति है, जो मानव समाज में सतत विकास और स्थायित्व सुनिश्चित करती है। अहिंसा का अर्थ है ऐसा प्रेम जो वंचित और असहाय लोगों की मुक्ति और कल्याण के लिए प्रेरित हो। गांधी (1935, 180) लिखते हैं, "अहिंसा मानवता के पास उपलब्ध सबसे महान हथियार है। यह किसी भी विनाशकारी हथियार से अधिक शक्तिशाली है, जो मानव कल्पना से निर्मित हो।" मार्टिन लूथर किंग जूनियर (1991, 19) ने भी कहा, "अहिंसा ख्गांधी की राजनीति, के केंद्र में प्रेम का नियम है," और राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए "मनुष्य में पर्याप्त बुद्धि और नैतिकता होनी चाहिए, ताकि वह द्वेष की शृंखला को तोड़ सके।" नाइजीरिया के राजनीतिक इतिहास में भी यह दृष्टांत स्पष्ट दिखाई देता है। वहां सबसे उपेक्षित और राजनीतिक रूप से हाशिए पर रही जाति इग्बो (Igbo) है, जिन्होंने अपने साहस और बुद्धिमत्ता से सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष में योगदान दिया। उनके पूर्वजों ने अत्यधिक पीड़ा और अन्याय झेला, और आज भी सरकारी निर्णयों में वे कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। अहिंसा संस्कृत शब्द है, जिसे गुजराती भाषा से लिया गया है, और इसका अर्थ है प्रेम और हिंसा न करना, यानी किसी भी जीवित प्राणी को चोट न पहुँचाना। गांधी मानते थे कि अहिंसा मानव सभ्यता के विकास के साथ विकसित हुई है और यह विश्वास करती है कि सभी जीवन एक हैंकृमानव, जीव–जंतु और प्रकृति। गांधी (1960, 99) ने इस पारंपरिक विश्वास को राजनीति और धर्म में व्यावहारिक रूप से लागू किया और लिखा, "अहिंसा की पहली शर्त है, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में न्याय।" अहिंसा के अभ्यास में मुख्य चुनौती यह है कि कब किसी कार्य को हिंसक माना जाए, चाहे वह मानवों के प्रति हो या प्रकृति के प्रति। इसका समाधान सरल है: जो व्यक्ति प्रेम और अहिंसा को अपने जीवन का लक्ष्य मानता है, उसे अपनी इच्छाओं और भौतिक लालसाओं को न्यूनतम करना चाहिए। गांधी (1947, 65) के अनुसार, "व्यक्ति को दूसरों की गरीबी का ध्यान रखना चाहिए, उसकी कमाई ईमानदारी पर आधारित हो, अटकलों और लाभ की लालसा से परहेज़ किया जाए, और उसका निवास तथा जीवन हर क्षेत्र में आत्मसंयम के अधीन हो।" गांधी के अनुसार, अहिंसात्मक राजनीति का मूल आत्म–अनुशासन और आत्म–नियंत्रण है। जीवन के सभी क्षेत्रों में संयम रखने वाला व्यक्ति ही अहिंसा की नींव पर राजनीति कर सकता है। यह दृष्टिकोण न केवल सामाजिक समानता और न्याय सुनिश्चित करता है, बल्कि धनी और शक्तिशाली व्यक्तियों में भी नैतिक जिम्मेदारी और परोपकार की भावना विकसित करता है।

अहिंसात्मक राजनीति की जड़ें प्राचीन दार्शनिक परंपराओं में भी मिलती हैं, जैसे Jean&Jacques Rousseau, Thomas Hobbes और अन्य प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांतकारों के सामाजिक अनुबंध विचार। गांधी के अनुसार, जब तक लोग अपनी शक्ति और अधिकार किसी पर भरोसेमंद रूप से नहीं सौंपते और शासन समग्र न्याय और नैतिकता के आधार पर नहीं चलता, तब तक समाज में हिंसा बनी रहती है। गांधी ने यह स्पष्ट किया कि धनी लोग अपने संसाधनों के रक्षक होते हैं, जिन्हें समाज के विकास के लिए नैतिक नियमों का पालन करना चाहिए। इस प्रकार, मानसिक परिवर्तन और ईमानदारी अहिंसात्मक राजनीति का आवश्यक हिस्सा हैं। गांधी (1966, 165) लिखते हैं, "जैसे ही मनुष्य स्वयं को समाज का सेवक मानकर कमाता और खर्च करता है, उसकी कमाई में शुद्धता आती है और यहीं अहिंसा का अभ्यास संभव होता है।" हालाँकि यह कठिन प्रतीत होता है, लेकिन यदि व्यक्ति बुद्धिमत्ता और नैतिकता के मार्गदर्शन में जीवन जीता है, तो असंभव को भी संभव बनाया जा सकता है। वर्तमान वैश्विक राजनीति और स्वतंत्रता की मांगों के संदर्भ में, यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक और व्यवहारिक है। अहिंसा न केवल अन्याय और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ कानूनी और नैतिक प्रतिरोध सुनिश्चित करती है, बल्कि यह स्थायी शांति और न्याय की दिशा में मार्गदर्शन भी प्रदान करती है।

अवज्ञा और नागरिक प्रतिरोध – एक अचूक शक्ति

भ्रष्टाचार, अन्याय और मनुष्यों द्वारा किए गए शोषण के खिलाफ नागरिक प्रतिरोध एक शक्तिशाली बल है, जो हथियारों और सैन्य शक्ति को भी चुनौती दे सकता है। किसी भी अन्यायपूर्ण नीति का जानबूझकर उल्लंघन, जो लोगों के प्राकृतिक अधिकारों को छीने या उन्हें वंचित करे, या राज्य के भ्रष्ट तत्वों द्वारा सत्ता और संसाधनों पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए बनाई गई धमकी, यही नागरिक अवज्ञा के अंतर्गत आती है। हेनरी डेविड थॉरो (1849) और लियो टॉलस्टॉय (1893) आधुनिक लेखक थे, जिन्होंने पहली बार व्यवस्थित रूप से यह विचार प्रस्तुत किया कि नागरिकों का नैतिक कर्तव्य है कि वे अवैध और अनुचित राज्य नीतियों के खिलाफ सक्रिय, अहिंसात्मक कार्रवाई करें। उनके प्रमुख कार्य, Resistance to Civil Government और The Kingdom of God Is Within You, में अब सामान्यतः नागरिक अवज्ञा के रूप में जानी जाने वाली अवधारणा स्पष्ट की गई। उनका मानना था कि नागरिकों का कर्तव्य है कि वे अहिंसात्मक तरीके से बुराई, भ्रष्टाचार और अन्यायपूर्ण राज्य नीतियों का विरोध करें। थॉरो ने कहा कि व्यक्ति को पहले स्वयं को मानव के रूप में देखना चाहिए और कानून के अधीन दूसरे स्थान पर। विवेक (Conscience) उच्चतम कानून है, जिसका पालन प्रत्येक नैतिक नागरिक को करना चाहिए। इसके अलावा, केवल अन्याय में भाग न लेने से काम नहीं चलेगा; नागरिकों को सक्रिय रूप से राज्य की अन्यायपूर्ण नीतियों से अलग होना चाहिए और अहिंसात्मक असहयोग करना चाहिए। असहयोग का अर्थ है सरकार की बुरी नीतियों का विवेकपूर्ण अस्वीकार, जैसे करों का भुगतान न करना। थॉरो ने इसे दासत्व और अन्यायपूर्ण युद्ध के खिलाफ एक नैतिक कृत्य बताया और इसके लिए जेल जाने के लिए भी तैयार रहे। उनका तर्क था कि चूंकि राज्य अपनी शक्ति और अधिकारों के लिए नागरिकों की सहमति पर निर्भर है, इसलिए नागरिक स्वतंत्र विवेक से अपनी निष्ठा रोक सकते हैं। नागरिक अवज्ञा हिंसात्मक परिस्थितियों में फलित नहीं हो सकती। यह केवल देशभक्त नागरिकों के लिए है और किसी भी प्रकार की हिंसा या गुंडागर्दी का समर्थन नहीं करती।

राष्ट्र निर्माण

कोई भी मानव समाज अपने नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुसज्जित अस्पताल, टिकाऊ बुनियादी ढांचा और सामाजिक सुविधाए जैसे सड़क नेटवर्क युद्ध, भ्रष्टाचार और घृणा के बीच नहीं दे सकता। राज्य निर्माण समय, मेहनत और राष्ट्र के प्रति प्रेम से प्रेरित योजनाओं की आवश्यकता होती है। जैसा कि पोप बेनेडिक्ट XIV ने कहा, "अपने देश का प्रेम, दूसरों के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर, मनुष्य को शाश्वत आनंद प्रदान करता है।" इसलिए, किसी भी सामाजिक केंद्र या शासन का उद्देश्य केवल सत्ता नहीं होना चाहिए। इसे मानव गरिमा और सर्वसाधारण भले के लिए काम करना चाहिए जैसे गरीबी उन्मूलन, शिक्षा में सुधार, आतंकवाद और बाल शोषण पर रोक। ये सभी कार्य केवल सामुदायिक प्रेम और सहयोग की भावना में ही संभव हैं। राष्ट्र निर्माण का अर्थ है राष्ट्र की जीवन स्तर में सुधार और नागरिकों के भौतिक और मानसिक विकास को सुनिश्चित करना। यह सतत प्रक्रिया है और नागरिकों के जीवन पर सीधा प्रभाव डालती है। यदि कोई राष्ट्र मानव विकास पर ध्यान नहीं देता, तो उसके नागरिक निष्क्रिय और अविकसित रहेंगे। राष्ट्र निर्माण का उद्देश्य है भौतिक और नैतिक–आध्यात्मिक स्वास्थ्य का संतुलन। मानसिक विकास और सामाजिक उत्तरदायित्व का मूल्यांकन नागरिकों की समाज में सहभागिता, गरीबों की सहायता और सीमाओं की समझ से होता है। इसलिए, राष्ट्र निर्माण मानव–केंद्रित होना चाहिए।

स्टैनली (2010, 37) ने स्पष्ट किया कि "विकास में आमतौर पर साक्षरता दर, जीवन प्रत्याशा और गरीबी

दर जैसी सूचकांक में सुधार शामिल होता है।" विकास गरीबी को कम करता है और राष्ट्र के जीवन स्तर को बेहतर बनाता है। यह केवल उस समाज में संभव है जो स्वार्थ, हाशिएकरण, जातिवाद, राजनीतिक और आर्थिक हिंसा से मुक्त हो। जेरमिया ऑनवे नग्वू (2020, 17) लिखते हैं कि राष्ट्र निर्माण में निःस्वार्थिता अनिवार्य है। उनके अनुसार, "निःस्वार्थिता राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक है, जो व्यक्तिगत लाभ की चिंता किए बिना वस्तुनिष्ठ भलाई की तलाश करती है।" गांधी का राष्ट्र निर्माण का दृष्टिकोण मार्क्सवादी भौतिकवाद के विपरीत है। उन्होंने राजनीतिक भौतिकवाद को अस्वीकार किया, जो केवल भौतिक समृद्धि और जीवन स्तर बढ़ाने में विश्वास करता है। उनके अनुसार, विकास का सिद्धांत सार्वभौमिक और नैतिक होना चाहिए। कोई राष्ट्र बमबारी, भ्रष्टाचार, अपहरण और मानव तस्करी जैसी आपदाओं के बीच स्थायी रूप से जीवित नहीं रह सकता और विकास की प्रेरणा दे सकता है।

निष्कर्ष

राजनीति का अभ्यास बिना भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार और राजनीतिक अन्याय के सबसे प्रभावी ढंग से कैसे किया जा सकता है, और इसमें अहिंसा को सबसे प्रभावशाली उपकरण के रूप में कैसे अपनाया जा सकता है? इसका उत्तर है सामाजिक और राजनीतिक बुराइयों के प्रति निरंतर प्रतिरोध और मानवता के प्रति निर्मल प्रेम, जो अपने देश के प्रति प्रेम से प्रेरित हो और विवेकपूर्ण मार्गदर्शन का पालन करते हुए अपनाया जाए। सत्य यह है कि कोई भी समाजकृभले उसमें खनिज संसाधनों की प्रचुरता हो या संपन्न नागरिकों की अधिक संख्या होकृयदि उसमें राष्ट्रीय और मानव प्रेम से प्रेरित भाईचारे की सेवाएँ न हों, तो वह जीवित नहीं रह पाएगा। प्रश्न यह उठता है कि हम किस प्रकार राजनीतिक परिवर्तन ला सकते हैं, विशेषकर ऐसे राष्ट्र में जिसका बहुसांस्कृतिक और सामाजिक–धार्मिक विरासत है। ऐसा तरीका क्या है जो न केवल हमारी जन्मभूमि बल्कि अन्य समुदायों को भी राजनीतिक संघर्ष के बिना एकीकृत कर सके चाहे वह संघर्ष हथियारों से हो या शब्दों के माध्यम से? इसका उत्तर है अपने लालसापूर्ण इच्छाओं पर नियंत्रण रखना और उद्देश्यपूर्ण मूल्यों और नैतिक संतुलन पर ध्यान केंद्रित करना। वास्तव में, गांधी की अहिंसात्मक राजनीति राजनीतिक स्थिरता के लिए वास्तविक अभ्यास (praxis) होनी चाहिए, क्योंकि यह सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को समाज के सभी लोगों के कल्याण के लिए आत्म–बलिदान के दृष्टिकोण से संबोधित करती है, जिसमें अपने प्रतिद्वंद्वी भी शामिल हैं। इसी दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि अहिंसा केवल नैतिक सिद्धांत नहीं, बल्कि राजनीतिक और सामाजिक शक्ति हैकृएक सार्वभौमिक वास्तविकता जिसे सभी जातियों के लोग अपनाकर न्याय और शांति स्थापित कर सकते हैं। इस प्रकार, हम यह दावा नहीं करते कि गांधी की अहिंसात्मक राजनीति केवल दार्शनिक व्याख्या है। इसके विपरीत, फ्रांट्ज़ फ़ैनॉन की हिंसात्मक उपनिवेशवाद विरोधी योजना इस दृष्टिकोण के प्रतिकूल है। जबकि अधिकांश अहिंसात्मक कार्यकर्ता उपनिवेशवाद, उपनिवेशी साम्राज्यवाद, राजनीतिक उपेक्षा और दिखावटी शासन के खिलाफ थे, यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि किसी भी परिस्थिति में सत्ता के खिलाफ हिंसा या हथियारों का उपयोग करना अनुचित है।

संदर्भ सूची

1. अबू–नीमर, मोहम्मद। 2003। इस्लाम में अहिंसा और शांति निर्माण सिद्धांत और अभ्यास। गेंसविले, थ्स्रू यूनिवर्सिटी प्रेस ऑफ़ फ्लोरिडा।
2. दिवाकर, आर. आर। 1968। गांधी के बाद अहिंसा मार्टिन लूथर किंग जूनियर का अध्ययन, संपादक जी., रामचंद्रन टी. के. महादेवन। बॉम्बे नई दिल्ली।
3. गांधी, के. मोहनदास। 1960। ऑल मेन आर ब्रदर्स, संपादक कृष्णा कृपालानी। अहमदाबाद, भारत नवजीवन मुद्रालय।
4. गांधी, 1966। द माइंड ऑफ महात्मा गांधीः गांधी के विचारों का विश्वकोश। अहमदाबाद जितेंद्र टी. देसाई।
5. गांधी, के. मोहनदास। 1967। द माइंड ऑफ महात्मा गांधी, संपादक आर. के. प्रभु – यू. आर. राव। अहमदाबाद, भारत जितेंद्र टी. देसाई।
6. पवित्र बाइबल, रिवाइज्ड स्टैंडर्ड वर्जन। ब्रिटेन बाइबल सोसाइटी रिसोर्स लिमिटेड, पृ. 223।
7. हॉर्नबी, अल्बर्ट सिडनी, माइकल एशबी, और सैली वेहमियर। 2000। ऑक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी ऑफ़ करंट इंग्लिश, सातवां संस्करण। ऑक्सफोर्ड ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. इग्वे, स्टेनली सी। 2010। हाउ अफ्रीका अंडरडेवेलप्ड अफ्रीका। पोर्ट–हार्कोर्ट प्रोफेशनल पब्लिशिंग कंपनी।
9. किंग, कोरेटा स्कॉट। 1969। माई लाइफ विद मार्टिन लूथर किंग जूनियर। न्यू यॉर्क होल्ट, राइनहार्ट विंस्टन प्रेस।

10. किंग, मार्टिन लूथर जूनियर। 1991। ए टेस्टामेंट ऑफ होप द एसेंशियल राइटिंग्स एंड स्पीचेज ऑफ मार्टिन लूथर किंग जूनियर, संपादक जेम्स मेलविन, प्रथम संस्करण। वाशिंगटन, सैन फ्रांसिस्को हार्पर कॉलिंस पब्लिशर्स।
11. ऑनवे, जेरमिया नग्वू। 2020। "सत्याग्रह की अर्थव्यवस्था और राष्ट्रीय विकास में इसकी प्रासंगिकता।" स्पेशल्टी जर्नल ऑफ अकाउंटिंग एंड इकोनॉमिक्स, वॉल्यूम 6, (1)। फेल्डकिर्चनर सियर्सबर्ग, ऑस्ट्रिया साइंस अरेना पब्लिकेशन्स।
12. पोप बेनेडिक्ट XVI। 2005। गॉड इज़ लव, सर्वोच्च पोंटिफ़ की एन्साइक्लिकल पत्र। नैरोबी, अफ्रीका पॉलिन पब्लिकेशन्स।
13. वाल्टन जूनियर, हेनेस। 1971। द पोलिटिकल फिलॉसफी ऑफ मार्टिन लूथर, जूनियर। वेस्टपोर्ट, कॉन ग्रीनवुड।